वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : २४ २७० अंक : ६

प्रवचनसार पद्यानुवाद

ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार

ज्ञान-ज्ञेयविभाग अधिकार

राग-रुष अर मोह ये परिणाम इनसे बंध हो।
राग है शुभ-अशुभ किन्तु मोह-रुष तो अशुभ ही।।१८०।।
पर के प्रति शुभभाव पुण पर अशुभ तो बस पाप है।
पर दु:खक्षय का हेतु तो बस अनन्यगत परिणाम है।।१८१।।
पृथ्वी आदि थावरा त्रस कहे जीव निकाय हैं।
वे जीव से हैं अन्य एवं जीव उनसे अन्य है।।१८२।।
जो न जाने इसतरह स्व और पर को स्वभाव से।
वे मोह से मोहित रहे 'ये मैं हूँ' अथवा 'मेरा यह'।।१८३।।
निज भाव को करता हुआ निजभाव का कर्ता कहा।
और पुद्गल द्रव्यमय सब भाव का कर्ता नहीं।।१८४।।
जीव पुद्गल मध्य रहते हुए पुद्गलकर्म को।
जिनवर कहें सब काल में ना ग्रहे-छोड़े-परिणमे।।१८५।।
भवदशा में रागादि को करता हुआ यह आतमा।
रे कर्मरज से कदाचित् यह ग्रहण होता छूटता ।।१८६।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

वास्तविक त्याग

भगवान आत्मा सुखस्वरूप है और राग दु:खरूप है, आत्मा ज्ञान है और राग अज्ञान है, आत्मा जीव है और राग अजीव है, आत्मा चेतनमय है और राग अचेतनमय है, पुद्गलमय है - इसप्रकार लक्षणों द्वारा दोनों में भिन्नता जानकर ज्ञानस्वभाव में एकता स्थापित कर जब मैं ज्ञानमात्र हूँ - ऐसा जानेगा, तब रागादि परभाव हैं - इसका ज्ञान होगा।

अब कहते हैं कि ऐसा जानकर ज्ञानी होकर सर्व परभावों को तत्काल छोड़ता है, उनका आश्रय नहीं करता। यह प्रत्याख्यान की बात है; अत: स्वभाव का स्वीकार होते ही रागादि परभाव छूट जाते हैं, इसी को राग छोड़ा - ऐसा कहा जाता है।

अहाहा ! वीतराग-सर्वज्ञ की वाणी और उनके आगम का क्या कहना ? मक्खन ही मक्खन भरा है। सर्वज्ञदेव ने क्या कहा, उन्होंने क्या किया, गुरु क्या उपदेश देते हैं, और सुननेवालों को कब भेदज्ञान होता है ? - यह सब आगम में बताया गया है।

दूसरे तरीके से कहें तो परमागम की वाणी में जो उपदेश है, वही निमित्त होता है; अज्ञानी का उपदेश भेदज्ञान होने में निमित्त नहीं होता।

स्वरूप में एकाग्र होने पर परभावों का आश्रय मिट गया और परभाव छूट गये - इसी का नाम प्रत्याख्यान है, चारित्र है। एक सैकेंड का प्रत्याख्यान अनंत जन्म-मरण का नाश करनेवाला है, वीतराग परमेश्वर के मार्ग की यही रीति है और यह रीति मात्र दिगंबर धर्म में ही है, अन्यत्र कहीं नहीं है। यही जैनधर्म है, दूसरा कोई जैनधर्म नहीं है।

ज्ञानी होकर सर्व परभावों को तत्काल छोड़ देता है। सर्व परभावों को - ऐसी भाषा है; इससे यह कहना चाहते हैं कि सूक्ष्म से सूक्ष्म गुण-गुणी के भेद के विकल्परूप भी जो परभाव हैं, उन्हें भी तत्काल छोड़ देता है अर्थात् वे भी स्थिरता के काल में छूट जाते हैं। इसे भगवान राग का त्याग कहते हैं। ज्ञानस्वरूप भगवान आत्मा है - ऐसा बोध हुआ, उसमें स्थिर हुआ तो राग स्वत: छूट गया - इसी को भगवान प्रत्याख्यान कहते हैं।

ह्न प्रवचनरत्नाकर भाग-2, पृष्ठ : 98-99

साधना चैनल पुन: आरंभ

विगत कुछ दिनों से जयपुर के आस-पास राजस्थान में साधना चैनल का प्रसारण नहीं हो पा रहा था; किन्तु अब यह पुन: आरंभ हो गया है। अत: प्रतिदिन रात्रि में 10.20 पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों को सुनना न भूलें।

स्वयं का उपकार कर

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के ३२ वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

गुरूपदेशादभ्यासात्संवित्तेः स्वपरान्तरं।
जानाति यः स जानाति मोक्षसौख्यं निरन्तरम्॥३३॥

जो गुरु के उपदेश से अभ्यास द्वारा स्व-संवेदनपूर्वक स्व-पर का भेद जानता है, वह निरन्तर मोक्षसुख को अनुभवता है।

(गतांक से आगे...)

स्व-पर की भिन्नता का वारंवार अभ्यास करने से अपने लक्ष्य का अनुभव होने लगता है। आत्मा के ध्येय का अनुभव होता है ह्न इसप्रकार स्व-पर का अभ्यास करते-करते पर का लक्ष्य छूटकर तत्काल ही स्व का लक्ष्य, अनुभव होता है।

इस अनुभव द्वारा स्व-संवेदनपूर्वक जो आत्मा को पर से भिन्न जानता-देखता है, वही मोक्षसुख का निरंतर वेदन करता है अर्थात् जितना रागसे भिन्न होकर स्वभाव में स्थिर होता है, उतना ही अतीन्द्रिय आनन्द का वेदन करने लगता है। यही मोक्षसुख की बानगी है। अतीन्द्रिय आनन्द की ओर झुका हुआ भाव निरंतर विच्छेदरहित अतीन्द्रिय आनंद को ही अनुभवता है।

धर्म की समस्त क्रियाओं का सार **भेदज्ञान और उसका फल मोक्षसुख** ही है। बार-बार करने योग्य, समझने योग्य, शास्त्र पढकर करने योग्य अथवा जीवन में करने योग्य कुछ है तो वह यही है, अन्य कुछ भी नहीं।

आत्मा से भिन्न शरीर-कर्म-रागादि आत्मा का कुछ नहीं कर सकते, किन्तु इन सभी से भिन्न स्वयं का ज्ञान करना, वह आत्मा का कार्य है, जो केवल

आत्मा ही कर सकता है। समवशरण में भगवान की वाणी में आये हुये दिव्यध्वनी का सार यही है, अत्यन्त सरल और साररूप बात एकमात्र यही है।

समस्त संतों-गुरुओं-वीतरागियों का उपदेश स्व से एकता और पर से भिन्नता करने के लिये ही है। वीतराग का उपदेश तो वीतरागतामय है। लाख बात की एक बात यही है। चारों अनुयोग का सार वीतरागता ही हैं। पर से भिन्न वस्तु का स्वरूप जानना ही वीतरागी के उपदेश का तात्पर्य है।

भगवान का उपदेश निश्चय-व्यवहार वस्तु से स्व-पर की भिन्नतारूप है। 'स्व' निश्चय और 'पर' व्यवहार है। राग की मंदता होना ह्न यह भी व्यवहार है। भगवान कहते है कि हे जीव ! तू राग से जुदा होकर अपने में ठहर ! स्व में निवास कर ! व्यवहार से निश्चय होता है ह्न ऐसा मत मान। राग के साथ स्वभाव में आना नहीं होता है। राग से भिन्न होकर ही स्वभाव में एकाग्रता हो सकती है और यही वस्तुस्थिति है।

लोक कहते हैं ह्न यदि ऐसा उपदेश ग्रहण करेंगे तो फिर कोई जीव तीर्थरक्षा नहीं करेंगे, यात्रा नहीं करेंगे, मन्दिरादि नहीं बांधेंगे। उनसे कहते है कि भाई ! जो होना है, वह तो होकर ही रहता है। समस्त बाह्यपदार्थ 'पर' है और तू स्वयं 'स्व' है। पर में करने जैसा कुछ भी कार्य नहीं है। तू उतावला होकर बाह्य में कुछ करने जायेगा तो भी जो होना है, वहीं होगा और धीर बनकर स्वभाव में ठहरेगा तो भी जो होना है, वहीं होगा। भाई ! यह तो मूल मार्ग की बात है। एकबार अपनी ओर दृष्टी तो कर, उसमें सबकुछ समा जाता है।

परद्रव्य लाभ-हानि करते हैं ह्न ऐसा माननेवाला जीव परद्रव्यों से जुदा नहीं हो सकता । वास्तव में ये परद्रव्य किसीप्रकार से लाभ-हानि नहीं पहुँचाते हैं। ये तो स्व-स्वरूप में रहते हैं, इसलिये परद्रव्यों की स्थिति बदलने का विचार छोडकर उनसे भिन्नता का ज्ञान कर, यही ज्ञान की कसौटी है।

गुरु-उपदेश में स्व-पर की भिन्नता का उपदेश सुनकर जब शिष्य अंतर में भी स्व-पर की भिन्नता का वारंवार अभ्यास करता है तो स्व-संवेदन प्रगट होता है; यही मोक्षसुखका आंशिक अनुभव है।

इस श्लोक के भावानुरूप तत्त्वानुशासन के 170 वें कलश में मुनिराज कहते है कि आत्मा को अनुभवपूर्वक प्राप्त करने के लिये आत्मा की उत्कृष्ट एकाग्रता होना आवश्यक है। उस समय यह आत्मा मन-वचन से अगोचर ऐसे स्वाधीन अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त करता है।

हे जीवों ! यही से धर्म की यथार्थ शुरूवात होती है। शरीर, राग-द्वेष आदि पर वस्तु है और ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा स्ववस्तु है। इसप्रकार स्व-पर की जुदाई का वारंवार अभ्यास करने से स्वभाव की एकाग्रता प्रगट होती है और उस समय जीव मोक्ष की जाति के आंशिक सुख का वेदन करता है।

इसप्रकार स्वाधीन आनन्द का उपदेश वह इष्टोपदेश है और इससे विपरीत परद्रव्य अथवा राग से आत्मा को आनंद या लाभ होता है ह्न ऐसा मानना वह इष्टोपदेश नहीं है। जिससे भेदज्ञान करना है ह्न ऐसे रागादि से कैसे लाभ होगा ? उससे तो बंध का ही लाभ होगा, मोक्ष का नहीं।

ज्ञानानन्दस्वरूप आत्मा 'स्व' और पुण्य-पापादि विकारी भाव 'पर' हैं। इसप्रकार स्व-पर की भिन्नता का अभ्यास करते हुए आत्मा की एकाग्रता होती है, उससे मोक्षसुख का अनुभव होता है और यही एकाग्रता बढते-बढते उत्कृष्ट मोक्षसुख के पूर्णता को प्राप्त होती है ह्न ऐसी उत्कृष्ट एकाग्रता में जो स्वाधीन आनन्द अनुभव में आता है, वह मन-वाणी से अगोचर है। वाणी से कथनयोग्य नहीं है।

यह तो मक्खन जैसी बात है। जिसे धर्म करना हो उसे स्व-पर की भिन्नतास्वरूप तत्त्व को अवश्य समझना होगा। केवली भगवान और ज्ञानी-महात्माओं ने यहीं कहा है तथा शास्त्रों में भी यहीं लिखा है। आत्मा की बात ग्रहण करनेवाले प्रत्येक जीव को स्व-पर भिन्नता के अभ्यासपूर्वक ही मोक्ष का उपाय प्राप्त हो सकता है।

परद्रव्य तो आत्मा से भिन्न है; किन्तु राग-द्वेषादि आस्रवभाव भी आत्मा से सर्वथा भिन्न ही है ह्न ऐसे परद्रव्य और विकारी भावों से भिन्न आत्मा का अनुभव करते हुए जो आनन्द आता है, वह आनन्द मन और वाणी से अगोचर है,

इसलिये मन और वाणी से आत्मा प्राप्त नहीं हो सकता तथा उसका वर्णन भी वाणी के द्वारा नहीं किया जा सकता है।

हे जीव ! आत्मतत्त्व को समझने के लिये देव-शास्त्र-गुरु ने जिसप्रकार स्व-पर की भिन्नता करने के लिये कहा, उसीप्रकार स्व-पर में भेदज्ञान कर। देव-शास्त्र-गुरु जो भाव प्रगट करना चाहते है, पात्र जीव उसी भाव को रुचिपूर्वक ग्रहण करते हैं।

लाख बात की बात यही, निश्चय उर लावो ह्न सर्वज्ञदेव-शास्त्र-गुरु सब एक ही बात कहते है। राग और आत्मा में भेदज्ञान करो !

भगवान आत्मा नित्यानन्दस्वरूप है, उसमें उत्पन्न जो पुण्य-पाप का विकल्प वह अनित्य, क्षणिक और स्व-स्वभाव से विपरीत है ह्न ऐसे विपरीत और अविपरीत स्वभाव में भेद करके उसका वारंवार अभ्यास करने से स्वाधीन अतीन्द्रिय आानन्द प्राप्त होता है। यही जीव का धर्म है और यही धर्म की सच्ची, सरल व्याख्या है।

आहाहा ! वीतराग सर्वज्ञ परमेश्वर ने समस्त शास्त्रों का सार इस एक ही श्लोक में भर दिया है।

पूज्यपादस्वामी कहते है कि हे पात्र शिष्य ! तू ज्ञानस्वरूप चैतन्यमूर्ति प्रभु के अनुभव से राग को जुदा कर। वास्तव में स्वभाव से एकाग्रता होनेपर ही राग से भिन्नता भासित होती है।

आत्मा ज्ञायक चैतन्यज्योति है, और रागादि उससे पर हैं ह्न ऐसा कहकर आत्मा और राग को भिन्न वस्तु बताते हैं । एक ओर राम और एक ओर ग्राम। ऐसे ही एक ओर ज्ञानादि अनंतगुणों का पिण्ड भगवान आत्मा और एक ओर रागादि विकल्प । इन दोनों की जुदाई का अभ्यास करते-करते जीव अतीन्द्रिय स्वाधीन आनन्द का अनुभव करता है।

जो करनेयोग्य है, वह भगवान ने कह दिया है अर्थात् भेदज्ञान करो ! यही एक मार्ग है। उपवास, व्रतादि साथ होवे तो हो, लेकिन ये कोई धर्म नहीं हैं। मुनिराजों ने इसप्रकार दो टूक शब्दों में बहुत मर्म समझा दिया है। **(क्रमशः)**

कार्यस्वभावज्ञान और कारणस्वभावज्ञान

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 11-12 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

केवलमिंदियरहियं असहायं तं सहावणाणं ति ।
सण्णाणिदरवियप्पे विहावणाणं हवे दुविहं ।।11।।
सण्णाणं चउभेयं मदिसुदओही तहेव मणपज्जं ।
अण्णाणं तिवियप्पं मदियाई भेददो चेव ।।12।।

इन्द्रियरहित और असहाय होने से केवलज्ञान स्वभावज्ञान है। विभावज्ञान ह्न सम्यग्ज्ञान और मिथ्याज्ञान के भेद से दो प्रकार का है।

मति, श्रुत, अवधि तथा मन:पर्यय सम्यग्ज्ञानरूप है तथा कुमति, कुश्रुत और कुअवधि मिथ्याज्ञानरूप हैं।

आत्मा उपयोगस्वरूपी है। उपयोग के ज्ञान और दर्शन ह्न ऐसे दो भेद हैं। उनमें से ज्ञानोपयोग के भेदों का वर्णन चल रहा है। यहाँ प्रत्यक्ष और परोक्ष ह्न ऐसे दो भेद बतलाये हैं। जिस ज्ञान में परद्रव्य निमित्तरूप नहीं है, वह ज्ञान प्रत्यक्ष और स्वभाव ज्ञानरूप है तथा जिसमें निमित्तरूप परद्रव्य का अवलम्बन है, वह विभावज्ञान है।

असहायकार्यस्वभावज्ञान ह्न केवलज्ञान है। वह कार्यस्वभावज्ञान उपाधिरहित स्वरूपवाला होने से केवल है, आवरणरहित स्वरूपवाला होने से क्रम, इन्द्रिय और देश-कालादि के व्यवहार से रहित हैं, एक-एक वस्तु में व्याप्त नहीं होता, समस्त वस्तुओं में व्याप्त होता है, इसलिये असहाय है।

केवलज्ञान अकेला है, उसमें किसी का मेल-मिलाप या अशुद्धता नहीं है। वह आवरणरहित होने से क्रमरहित जाननेवाला है। उसमें इन्द्रियों का निमित्त नहीं है तथा देश-काल का अन्तराय भी नहीं है। अतिदूर क्षेत्र अथवा अतिदीर्घ काल जानने में भी उसको विघ्न नहीं होता ह्न ऐसा आत्मा का ज्ञानसामर्थ्य है। उसमें जो हीनता है,

वह आदरणीय नहीं है। केवलज्ञान समस्त ज्ञेयों को एकसाथ जाननेवाला है, एक-एक वस्तु को क्रम से नहीं जानता, इसलिये वह असहाय है ह्न पर्याय में ऐसा ज्ञान प्रकट होना ही कार्यस्वभावज्ञान है।

कारणस्वभावज्ञान भी वैसा ही है। त्रिकाली ज्ञानोपयोगरूप परिणतिस्वरूप प्रत्यक्ष कारणस्वभावज्ञान है। जैसा कार्यज्ञान कहा है, कारणज्ञान भी वैसा ही क्यों कहा ? निज परमात्मा में रहनेवाले सहजदर्शन, सहजचारित्र, सहजसुख और सहजचित्परमशक्तिरूप निजकारण समयसार के स्वरूपों को युगपत् जानने में समर्थ होने से कारणस्वभावज्ञान भी वैसा ही है।

देखो यहाँ त्रिकाली कारणज्ञान में भी निजकारण समयसार को जानने की सामर्थ्य कही गई है। वह कहीं कार्यरूप नहीं है; किन्तु वैसी सामर्थ्य है। यह तो त्रिकालस्वरूपप्रत्यक्ष है, इसमें कोई भेद नहीं पड़ता।

एकरूप सहजचित्शक्तिरूप त्रिकालज्ञानोपयोग है। उसमें निजकारणपरमात्मा में रहनेवाले सहजदर्शन-चारित्र-सुख और सहज परमचित्शक्तिरूप निजकारण परमात्मा के स्वरूपों को युगपत् जानने की सामर्थ्यवाला कारणस्वभावज्ञान है। यह ज्ञान शक्तिरूप है, स्वभावरूप है; कार्यरूप नहीं है।

यदि कोई ऐसा कहे कि केवलज्ञान तो कर्म के क्षय की अपेक्षा से क्षायिक ज्ञान है और उसी ज्ञान को अकेले आत्मा के पारिणामिक स्वभाव की अपेक्षा से सहज पारिणामिकभावरूप कैसे कहा ?

उससे कहते हैं कि यह तो त्रिकाली उपयोग की बात है। जो केवलज्ञान पर्याय में नवीन प्रकट होता है, उसकी यह बात नहीं है। यहाँ जो स्वरूपप्रत्यक्ष कहा वह त्रिकालशक्तिरूपस्वभाव की बात है। यह जो परमस्वभावरूप कारणज्ञान है, वह द्रव्य का विशेषरूप वर्तमान है-त्रिकालएकरूप है; ज्ञान का जो त्रिकालस्वरूप प्रत्यक्षरूपभाव है, उसको यहाँ स्वरूप प्रत्यक्ष कहा है। केवलज्ञान पर्याय प्रकट होती है, उसे स्वरूपप्रत्यक्ष नहीं कहा, उसको तो सकलप्रत्यक्ष कहा गया है।

यहाँ केवलज्ञान को कार्यस्वभावज्ञान कहा और कारणस्वभावज्ञान भी वैसा ही है ह्न ऐसा कहा, वह शक्तिरूप समझना ।

निजकारणपरमात्मा सहजदर्शन, सहजचारित्र, सहजसुख और सहजपरम

चित्शक्तिरूप है, उसे युगपत् जानने की शक्ति कारणस्वभावज्ञान में है। उसमें कार्य और कारण दोनों के दो भेद हैं। कार्यस्वभाव ज्ञान तो असहाय, शुद्ध और समस्त पदार्थों को एकसाथ जाननेवाला है और कारणस्वभावज्ञान में भी वैसी ही सामर्थ्य है। यह कारणस्वभावज्ञानोपयोग तो सभी जीवों को वर्तमान में वर्तरहा है।

सहजपरमचित्शक्ति, दर्शन, चारित्र और सुख ह्न ये सब त्रिकालस्वभाव है। कारणज्ञान उनको युगपत् जानने की सामर्थ्यवाला है। केवलज्ञान तो सबको प्रत्यक्ष जानता है और कारणस्वभावज्ञान में भी सबको जानने की सामर्थ्य है; अत: वह भी वैसा ही है। सहज दर्शनादिरूप निजकारण समयसार को जानने की शक्ति है ह्न ऐसा कहकर त्रिकाली कारणस्वभावज्ञान का सामर्थ्य बतलाया है। वह कहीं उत्पाद-व्ययरूप परिणमन करके नहीं जानता है, अपितु उसमें ऐसा त्रिकाली सामर्थ्य है; अत: वह स्वरूपप्रत्यक्षज्ञान है। इसप्रकार शुद्धज्ञान का स्वरूप कहा।

कार्यस्वभावज्ञान और कारणस्वभावज्ञान ह्न ये दोनों ही शुद्ध है। सहजदर्शन-ज्ञान-चारित्र और आनंदस्वरूप जो अपना कारणपरमात्मा है, उसको जानने का सामर्थ्य इस कारणस्वभावज्ञानोपयोग में है।

यह मात्र सिद्धजीवों की बात नहीं; अपितु सभी जीवों का ऐसा उपयोग त्रिकाल वर्तरहा है, यह सबकी बात है। उसकी प्रतीति करके उसका अवलम्बन लेने से कार्यस्वभावज्ञान प्रकट होता है।

केवलज्ञान तो एकसाथ तीनकाल, तीनलोक को जानता है। यह बात जंचना भी लोगों को कठिन पड़ रही है। यदि केवलज्ञान में सबकुछ जानने में आ गया, और वैसा ही होगा तो फिर कुछ फेर-फार करने का पुरुषार्थ ही नहीं रहता; अत: पुरुषार्थ तो उड़ गया ह्न ऐसा अज्ञानी मानता है। किन्तु भाई ! जहाँ ऐसे ज्ञानस्वभाव की प्रतीति की, वहीं पुरुषार्थ आ गया। पर में तो कुछ फेर-फार करना ही नहीं है।

कार्यस्वभावज्ञान तो केवलज्ञान है । इसके अतिरिक्त यहाँ तो कारणस्वभाव ज्ञानोपयोग का वर्णन किया है। आगे इसी उपदेश को ब्रह्म-उपदेश कहेंगे।

निजकारणसमयसार को जाननेवाला जो त्रिकालस्वरूपप्रत्यक्ष कारणस्वभाव ज्ञानोपयोग है, उसके आश्रय से केवलज्ञानरूपी कार्य प्रकट होता है।

सहजदर्शन-चारित्र-सुख और सहजचित्शक्तिरूप निजकारणसमयसार है, उसको युगपत् जानने का सामर्थ्य कारणस्वभावज्ञान में है; ये दोनों मिलकर परमपारिणामिक

भाव पूरा होता है, जो शुद्ध निश्चयनय का विषय है और जो केवलज्ञानादि पर्यायें प्रकट होती हैं, वे व्यवहारनय का विषय हैं; इसप्रकार दोनों मिलकर प्रमाणज्ञान होता है।

त्रिकालकारणस्वभावरूपज्ञान की प्रतीति करने पर साधकदशारूप कार्य प्रकट होता है। इसके अतिरिक्त कोई दूसरा कारण नहीं है। त्रिकालवर्तताकारणस्वरूप प्रत्यक्षज्ञान है। वही केवलज्ञान का कारण है। वह सदा ही वैसे का वैसा ही ब्रह्मस्वरूप है। इसलिये इस उपदेश को ब्रह्म-उपदेश कहा है। वेदान्तवाले जो ब्रह्म कहते हैं, उसकी यह बात नहीं है। उन्हें तो सामान्य-विशेष का भी पता नहीं है। यहाँ तो त्रिकालशक्तिरूप जो कारणस्वभावज्ञान है, उसके आश्रय से जो केवलज्ञान प्रकट होता है और लोकालोक को जानता है ह्न उसकी बात है।

केवलज्ञान को स्व की अपेक्षा से तो पारिणामिकभाव की पर्याय कहा जाता है और निमित्त की अपेक्षा से क्षायिकभाव भी कहा जाता है। उसीप्रकार क्रोध को निमित्त की अपेक्षा से उदयभाव कहा जाता है और उसे ही पारिणामिक भाव की अपेक्षा से पारिणामिकभाव की पर्याय कहा जाता है और अपना ही परिणमन होने से उसको स्वभाव भी कहा जाता है। क्षायोपक्षमिकज्ञान को निमित्त की अपेक्षा क्षयोपशमभाव और स्व की अपेक्षा से पारिणामिकभाव की पर्याय भी कहते हैं; किन्तु यहाँ वह बात नहीं है। यहाँ तो सब जीवों को जो त्रिकालसामर्थ्यरूप एक त्रिकालज्ञानोपयोग वर्त रहा है, उसकी बात है।

आगे ४७ वीं गाथा में सब जीवों को सिद्धसदृश कहेंगे। वहाँ कहेंगे कि 'जैसे सिद्धात्मा हैं, वैसे ही भवलीन संसारी जीव हैं; क्योंकि वे संसारी जीव सिद्धात्माओं की तरह जन्म-जरा-मरण से रहित और अष्टगुणालंकृत है।' वहाँ संसारी जीवों को भवलीन भी कहा और फिर सिद्धसदृश अष्टगुणों से अलंकृत भी कहा ह्न सो वहाँ वर्तमान पर्याय को लक्ष्य में न लेकर ही सिद्ध जैसा कहा है; किन्तु उनके अष्ट गुण सिद्धों के समान वर्तमान में प्रकट नहीं है।

यहाँ अभी जो कारणस्वभावज्ञानोपयोग का कथन किया है, वह सब जीवों को वर्तमान में वर्तरहा है। वह तो सभी जीवों में त्रिकाल है और उसी के आश्रय से कार्यस्वभावज्ञान नया प्रकट होता है। ये दोनों ही ज्ञान शुद्ध हैं।

इसप्रकार शुद्धज्ञान का स्वरूप कहा। **(क्रमशः)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आत्मा को क्रोधादिरूप अथवा ज्ञानरूप कौन करता है ? क्या कर्म का उदय अथवा प्रतिकूल संयोग उसे अज्ञानरूप नहीं करते ?

उत्तर : जिसप्रकार श्वेत शंख चाहे जितनी काली मिट्टी खावे, तथापि वह काली मिट्टी उसे श्वेत से कृष्ण नहीं कर सकती; उसीप्रकार चैतन्यस्वरूप आत्मा को चाहे जितना तीव्र कर्मोदय आवे अथवा प्रतिकूल संयोग उपस्थित हो, तो भी वे ज्ञानस्वरूप आत्मा को अज्ञानरूप नहीं कर सकते अथवा क्रोधादि कषायरूप नहीं परिणमा सकते। आत्मा जो क्रोधादि अज्ञानरूप परिणमता है, वह तो अपने ही अपराध से परिणमता है, परद्रव्य तो आत्मा को बिलकुल विकार नहीं करा सकता।

देव-गुरु आदि परद्रव्य के कारण आत्मा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप से होता है ह्न ऐसा नहीं है; आत्मा तो स्वयं ही स्वयं से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप परिणमन करता है और तभी रत्नत्रयगुण प्रकट होता है। परद्रव्य आत्मा को ज्ञानी या अज्ञानी बिलकुल कर ही नहीं सकता। आत्मा स्वयं ही अपने अपराध से क्रोधादिरूप और अपने गुण से ज्ञानरूप होता है।

प्रश्न : सम्यग्दर्शन तथा केवलज्ञान होने का कारण कौन है ?

उत्तर : सम्यग्दर्शन होने में शुद्धात्मा की प्रतीति के अतिरिक्त अन्य कोई कारण नहीं है, नवतत्त्व के विकल्प भी सम्यग्दर्शन में कारण नहीं है। केवलज्ञान होने में शुद्धोपयोग कारण है, अन्य कोई कारण नहीं है। केवलज्ञान के लिये शुद्धोपयोग के अतिरिक्त अन्य किसी (रागादि) को साधन मानना तो केवलज्ञान का अनादर है, शुद्धोपयोग का अनादर है, धर्म का अनादर है, मोक्ष का अनादर है तथा मोक्ष के साधक शुद्धोपयोगी संतों का भी अनादर है। इस विपरीत मान्यता में महान अपराध है और यह मान्यता संसार का कारण है।

अहो ! शुद्धोपयोग तो केवलज्ञान का राजमार्ग है, शुभराग तो केवलज्ञान को रोकनेवाला है, लुटेरा है। राग को धर्म का साधन माननेवाला तो राजमार्ग का अपराधी है; वह **राजमार्गी** नहीं है, वह तो **रागमार्गी** है अर्थात् संसारमार्गी है।

भव्य गजरथ महोत्सव पूर्वक पंचकल्याणक सम्पन्न

किशनगढ़ (राज.) : यहाँ नवनिर्मित भगवान महावीरस्वामी एवं भगवान नेमिनाथ समवशरण मंदिर हेतु 16 से 21 नवम्बर, 05 तक श्री नेमिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन भव्य गजरथ महोत्सव सहित आर. के. वाटिका, किशनगढ़ में सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पर प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रजी जैन आगरा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राजेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित सुरेशचन्दजी सागर आदि के प्रवचनों का लाभ मिला।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद द्वारा सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर, पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित नागेशजी जैन पिड़ावा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित संदीपजी शास्त्री छतरपुर, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित मनीषजी सिद्धान्त खडैरी, पण्डित पंकजजी शास्त्री खड़ैरी आदि के सहयोग से सम्पन्न हुई।

जिनमंदिर में मूलनायक भ.महावीरस्वामी, विधिनायक भ. नेमिनाथस्वामी तथा भ.पार्श्वनाथ के अतिरिक्त भगवान नेमिनाथ समवशरण में जिन प्रतिमायें विराजमान की गईं। जिनमंदिर में एक देव-शास्त्र-गुरु वेदी का निर्माण भी किया गया, जिसमें भगवान नेमिनाथ, चार अनुयोगमयी जिनवाणी एवं पूर्वाचार्यों के चरणकमल स्थापित किये गये। मुख्य वेदी पर मार्बल के 64 चंवर स्थापित किये गये।

महोत्सव में नेमिकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती रतनदेवी-मोतीचन्दजी लुहाड़िया जोधपुर को प्राप्त हुआ। सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री प्रदीपकुमार-कुसुम चौधरी किशनगढ़ तथा कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री संजीवकुमार-संस्कृति गोधा जयपुर थे। सम्पूर्ण महोत्सव यज्ञनायक श्री भागचन्दजी चौधरी किशनगढ़ के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

राजुल के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती भंवरदेवी-राजमलजी लवाण को मिला।

दिनांक 16 नवम्बर को प्रतिष्ठा महोत्सव का ध्वजारोहण श्री पूनमचन्दजी-नरेशजी लुहाड़िया परिवार मुम्बई ने किया। सिंह द्वार का उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी, श्री कपूरचन्दजी गदिया व श्री अजितजी पाटनी अजमेर, प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री कन्हैयालालजी दलावत उदयपुर तथा प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री पदमचन्द जम्बूकुमारजी भौंच परिवार अलवर ने किया। याग मण्डल विधान का आयोजन श्री चांदमलजी ललितकुमारजी जैन लूणदा द्वारा किया गया।

गर्भ कल्याणक पर कुमारी वीणा अजमेरा, भीलवाड़ा का 63 कलश नृत्य, जन्मकल्याणक पर मैनपुरी का 50 फीट का पालना, तपकल्याणक पर सांस्कृतिक मण्डल मण्डलेश्वर द्वारा 'नेमि-राजुल का वैराग्य', केवलज्ञानकल्याणक पर युवा फैडरेशन भीलवाड़ा द्वारा प्रस्तुत 'संसार दर्शन' नाटक तथा मोक्षकल्याणक के दिन तीन मंजिला गजरथ किशनगढ़ नगर के लिये आकर्षण का केन्द्र रहे।

21 नवम्बर को पर्यावरण एवं खनन मंत्री श्री लक्ष्मी नारायण दबे का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

भ.महावीर जिनमंदिर का उद्घाटन श्री पूनमचन्दजी लुहाड़िया, समवशरण मंदिर का उद्घाटन श्री विमलजी जैन नीरू कैमीकल्स दिल्ली, स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्री नेमीचन्दजी पहाड़िया पीसांगन तथा पाठशाला का उद्घाटन श्री भागचन्दजी कालिका उदयपुर के करकमलों से हुआ।

महावीर स्वामी जिनमंदिर पर स्वर्ण कलश व ध्वजारोहण श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई के प्रतिनिधि श्री बसन्तभाई दोशी के करकमलों से हुआ तथा समवशरण जिनमंदिर पर कलश एवं ध्वजारोहण श्री निहालचन्दजी जैन ओसवाल, जयपुर द्वारा हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्थायें श्री राजेन्द्रजी चौधरी के निर्देशन में श्री रमेशजी गंगवाल, श्री मुकेशजी पाटनी, श्री तिलक चौधरी एवं श्री अरिहंत चौधरी के सहयोगियों ने संभाली।

ज्ञातव्य है कि जिनमंदिर निर्माण एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा कराने में श्री प्रदीपकुमारजी भागचन्दजी चौधरी परिवार किशनगढ़ का विशेष योगदान है।

महोत्सव में सम्पूर्ण देश से लगभग 4-5 हजार मुमुक्षुओं ने पधारकर धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर 57 हजार 710 रुपये का सत्साहित्य एवं 9,988 घण्टों के सी.डी व ऑडियो कैसिट्स बिके।

लन्दन पंचकल्याणक हेतु सम्पर्क करें

आपको सूचित करते हुये प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि वृषभादि महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकरों एवं कुन्दकुन्दादि आचार्यों द्वारा प्रवाहित वीतरागी तत्त्वज्ञान के रहस्योद्घाटक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग से देश-विदेश में अध्यात्म वाणी का व्यापक प्रचार हुआ है। इसी शृंखला में देश में सैंकड़ों जिनमन्दिरों का निर्माण हुआ और हो रहा है। उनकी सदेह उपस्थिति में भी नैरोबी-अफ्रीका में प्रथम जिनमन्दिर का निर्माण होकर पंचकल्याणक का भव्य आयोजन हुआ था।

अब पुन: विदेश में दूसरे दिगम्बर जैन शुद्ध तेरापंथ एवं तत्त्वज्ञान के पोषक जिनमंदिर का निर्माण हो चुका है, जिसमें भगवान महावीरस्वामी की धवल पाषाण से निर्मित 61 इंच उन्नत पद्मासन जिनप्रतिमा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पूर्वक विराजमान की जायेगी। प्रतिमा भारत से लंदन पहुँच चुकी है। जिनमंदिर एवं प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा दिनांक 4 अगस्त से 9 अगस्त, 2006 तक होनेवाले पंचकल्याणक महोत्सव में होगी। जो भी भाई-बहिन इस पुण्य अवसर का लाभ लेने हेतु लंदन जाना चाहते हैं; वे विस्तृत जानकारी हेतु निम्न पतों पर सम्पर्क करें ह्न

1. श्री हितेनभाई सेठ, श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, कृष्ण कुंज, वी.एल. मेहता मार्ग, विले पार्ले (वे.) मुम्बई। E-mail : kahanraj@mtnl.net.in Tel: (022) 26130820

2. श्री पवन जैन, तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ-आगरा मार्ग, सासनी, जि.महामायानगर (उ.प्र.) E-mail : enquiry@pavnagroup.com & nairkcd@yahoo.com
Tel: (0571) 2410395, 2410010, Fax : (0571) 2410019

निवेदक ह्न दिग.जैन एसोसिएशन, भगवान महावीर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा समिति, लन्दन

अध्यक्ष, डॉ. दिनकरभाई शाह **मंत्री,** श्रीमती शीतल विजेन शाह

Correspondence Address : 52 Powys Lane, Palmers Green, London N13 4HS
Website: www.londonpratishta.com, E-mail: info@londonpratishta.com

डॉ. भारिल्ल जैनसमाज की महान विभूति : गुलाबचन्द कटारिया

उदयपुर (राज.) : यहाँ पटेल सर्किल स्थित सुन्दरसिंह भण्डारी कार्यालय में मंगलवार दिनांक 4 अक्टूबर 05 को '**डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व**' पुस्तक का विमोचन राजस्थान सरकार के **गृहमंत्री श्री गुलाबचन्दजी कटारिया** के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर माननीय कटारियाजी ने डॉ. भारिल्ल को जैन समाज की **महान विभूति** बताते हुये भारतीय साहित्य को उनके सांस्कृतिक एवं साहित्यिक योगदान को अविस्मरणीय बताया।

साथ ही कृति के लेखक डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर को उनके विगत ५ वर्ष के अथक प्रयासों हेतु हार्दिक बधाई दी। समारोह के अध्यक्ष नगर परिषद् सभापति श्री रवीन्द्र श्रीमाली तथा मुख्य अतिथि भाजपा शहर जिलाध्यक्ष श्री ताराचन्दजी जैन थे।

उक्त कृति में कुल सात अध्याय है; जिसमें लेखक ने डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के जीवन व साहित्य पर विस्तार से प्रकाश डाला है। ४२३ पृष्ठीय इस कृति का प्रकाशन पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा किया गया है। जिसका विक्रय मूल्य ३० रुपये है।

कार्यक्रम के संयोजक अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश प्रतिनिधि श्री जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर थे। आभार प्रदर्शन डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने किया। **ह्न जिनेन्द्र शास्त्री**

गोष्ठी सानन्द सम्पन्न

1. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा आयोजित गोष्ठियों की शृंखला में 30 नवम्बर, 05 को **नैगमादि सप्त नय** विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। अध्यक्षता पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने की। संचालन सौरभ जैन एवं मंगलाचरण विवेक जैन ने किया। गोष्ठी में शास्त्रीवर्ग से कमलेश जैन एवं उपाध्यायवर्ग से गजेन्द्र जैन ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया।

2. इसी शृंखला में 4 दिसम्बर, 05 को **आत्मा की शक्तियाँ** विषय पर आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. दीपकजी जैन ने की। गोष्ठी में अतुल जैन एवं सी.बाबू ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। संचालन अनुराज जैन व मंगलाचरण अभिषेक जैन ने किया। **ह्न कमलेश एवं शाकुल जैन**

श्रीमती ममता जैन को पीएच. डी. की उपाधि

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी ने ४५ वर्षों तक भ. महावीरस्वामी द्वारा प्रतिपादित एवं कुन्दकुन्दादि आचार्यों द्वारा लिखित शाश्वत सिद्धान्तों का उद्घाटन अपने आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से कर जैनसमाज की सुषुप्त चेतना को जागृत किया; किन्तु उनके प्रवचन साहित्य का विश्वविद्यालयीन स्तरीय मूल्यांकन आज तक नहीं हुआ था।

इस आवश्यकता की पूर्ति **श्रीमती ममता जैन** धर्मपत्नी पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाडा ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर से डॉ. पृथ्वीराज मालीवाल (पूर्व विभागाध्यक्ष एवं सह-आचार्य) के निर्देशन में **कानजीस्वामी के प्रवचन साहित्य का अनुशीलन** नामक शोधप्रबन्ध प्रस्तुत कर पूर्ण की। आपको जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

अष्टाह्निका समाचार

१. गजपंथा सिद्धक्षेत्र (नासिक-महा.) : यहाँ दिनांक ८ से १३ नवम्बर २००५ तक अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पंचमेरु-नन्दिश्वर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, विदुषी पुष्पाबेन खण्डवा तथा श्री इन्द्रकुमारजी खण्डवा के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित दीपकजी डांगे व पण्डित सुरेशजी काले ने सम्पन्न कराये।

२. सागर (म.प्र.) : यहाँ नवनिर्मित श्री महावीर जिनालय में दिनांक ८ से १५ नवम्बर, २००५ तक श्री इन्द्रध्वज मण्डल विधान के अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली तथा पण्डित सुदीपजी जैन बीना के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़ एवं पण्डित नन्हेलालजी जैन सागर ने कराये।

३. सोलापुर (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित विक्रान्तजी शाह एवं पण्डित राजकुमारजी आलंदकर के प्रवचनों का लाभ मिला। यहीं पर श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ दि. जैन कासार मन्दिर में दि. १० से १३ नवम्बर, ०५ तक श्री बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन हुआ। जिसमें पण्डित राजकुमारजी आलंदकर के विधान की जयमाला पर प्रवचन हुये। विधान के कार्य पण्डित प्रशान्तजी मोहरे, पण्डित रवीन्द्रजी काले एवं पण्डित विजयजी कालेगोरे ने सम्पन्न कराये। **ह्न सुभाष पटवा**

४. मुम्बई : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज बृहन्मुम्बई के तत्त्वावधान में मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में प्रवचनों का आयोजन किया गया; जिसमें **श्री सीमन्धर जिनालय में** पण्डित कमलचन्दजी पिडावा, **मलाड (ईस्ट) में** पण्डित रतनचन्दजी कोटा, **दहीसर में** ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर, **भायन्दर में** पण्डित मानमलजी जैन कोटा, **मलाड (वेस्ट) में** पण्डित विपिनजी जैन आगरा एवं **दादर में** पण्डित सोनूजी शास्त्री मुम्बई के प्रवचनों का लाभ मिला।

५. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में गणधरवलय ऋषि मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन दोनों समय पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि के सारगर्भित प्रवचन हुये।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य पण्डित मधुकरजी जैन जलगांव के सान्निध्य में पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर एवं श्री हीराचन्दजी बोहरा ने सम्पन्न कराये। **ह्न विजय पाण्डया**

आ. कुन्दकुन्द का आचार्य पदारोहण दिवस मनाया

गुना (म.प्र.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दि. जैन बाजार मंदिर में आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी के आचार्य पदारोहण पर दिनांक 24 नवम्बर को आचार्य कुन्दकुन्द की विशेष पूजन की गई। रात्रि में अनेक वक्ताओं ने आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन-दर्शन एवं सैद्धान्तिक विषयों पर प्रकाश डाला।

इसके पूर्व दिनांक 23 नवम्बर को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की पुण्यतिथि पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना के प्रवचन का लाभ मिला तथा गुरुदेवश्री को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

कार्यक्रम पण्डित अनिलजी शास्त्री एवं श्री केवलचन्दजी पाण्ड्या के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

विदर्भ एवं मराठवाड़ा के ३५ स्थानों पर ग्रुप शिविर

महाराष्ट्र प्रान्त तत्त्वप्रचार-प्रसार समिति नागपुर एवं श्री कुन्दकुन्द प्रवचन-प्रसारण संस्थान उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में विदर्भ एवं मराठवाडा के ३५ स्थानों पर दिनांक ५ से १३ नवम्बर, २००५ तक विशाल धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया।

शिविर में ५० विद्वानों के सान्निध्य में लगभग ७-८ हजार साधर्मियों ने तथा ३९२० शिविरार्थियों ने विभिन्न विषयों की परीक्षायें उत्तीर्ण करके प्रमाण-पत्र प्राप्त किये।

शिविर में पण्डित गुलाबचन्दजी बोरालकर, पण्डित आलोकजी कारंजा, पण्डित नंदकिशोरजी मांगुलकर काटोल, पण्डित फूलचन्दजी मुक्किरवार, विदुषी मंजुषाजी मुक्किरवार, पण्डित कीर्तिजयजी गोरे, पण्डित प्रदीपजी माद्रप, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित नेमिचन्दजी महाजन, पण्डित दिलीपजी महाजन, पण्डित वीरेन्द्रजी वीर फिरोजाबाद आदि विद्वानों का लाभ मिला।

दिनांक ५ नवम्बर को शिविर का उद्घाटन श्री सन्तोषजी पाटनी वाशिम के करकमलों से हुआ तथा समापन समारोह दिनांक १३ नवम्बर को अंतरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर(जैन) में आयोजित हुआ; जिसकी अध्यक्षता पण्डित धन्यकुमारजी भोरे कारंजा ने की। मुख्यअतिथि श्री माणकचन्दजी बज और श्री चन्द्रशेखरजी उखलकर थे। अतिथियों में श्री संतोषजी पाटनी, डॉ. सुरेश जैन, श्रीमती विमला जैन एवं श्रीमती शकुन जैन नागपुर उपस्थित थे। शिविर में पुरस्कार वितरण श्री सिंघई नरेशकुमार जैन नागपुर के करकमलों से हुआ।

सम्पूर्ण शिविर समिति प्रमुख **श्री विश्वलोचनजी जैनी** के निर्देशन में पण्डित सुनीलजी बेलोकर, सुलतानपुर एवं पण्डित विजयजी बोरालकर, वाघजाली के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। शिविर में नागपुर मुमुक्षु मण्डल एवं समिति के सदस्यों का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

26 दिस. से 01 जन., 2006	**कोलकाता**	**पंचकल्याणक**
14 से 18 जनवरी, 2006	**सागर**	**पंचकल्याणक**
19 जनवरी, 2006	**निसईजी (म.प्र.)**	**मेला**
04 से 10 फरवरी, 2006	**कोटा**	**पंचकल्याणक**
09 से 26 मई, 2006	**देवलाली**	**प्रशिक्षण-शिविर**
26 मई से 16 जुलाई, 06	**विदेश**	**धर्मप्रचारार्थ**
23 जुलाई से 1 अगस्त,06	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**
04 से 09 अगस्त, 2006	**लंदन**	**पंचकल्याणक**
20 से 26 अगस्त, 2006	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2006

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
गुरुवार 26 जनवरी 2006	1. बालबोध पाठमाला भाग1 (बालबोध प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग1 (प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शुक्रवार 27 जनवरी 2006	1. बालबोध पाठमाला भाग 2 (बालबोध द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग 2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 (प्रवेशिका द्वितीय खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
शनिवार 29 जनवरी 2006	1. बालबोध पाठमाला भाग 3 (बालबोध तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

श्री कुन्दकुन्द-कहान दि. जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में

बुंदेलखण्ड की हृदयस्थली 'सागर' में नवनिर्मित श्री महावीरस्वामी जिनमंदिर का

श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(शुक्रवार, 13 जनवरी, 06 से गुरुवार, 19 जनवरी 06 तक)

कार्यक्रम स्थल : खेल परिसर, कचहरी रोड, सागर (म.प्र.)

आपको सूचित करते हुये अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि बुन्देलखण्ड के सागर शहर में नवनिर्मित 108 फीट उत्तुंग शिखर युक्त श्री महावीरस्वामी दि. जिनमंदिर का निर्माण हुआ है, जिसका श्री 1008 पार्श्वनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव दिनांक 13 से 19 जनवरी, 2006 तक अनेक मांगलिक आयोजनों के साथ सम्पन्न होने जा रहा है।

जिनमंदिर में मूलनायक भगवान महावीरस्वामी की 49 ईंच पद्मासन प्रतिमा एवं भगवान वासुपूज्य, भगवान मल्लिनाथ, भगवान नेमिनाथ एवं विधिनायक भगवान पार्श्वनाथ की मनोज्ञ प्रतिमायें विराजमान होंगी साथ ही समवशरण की सुन्दर रचना में भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमायें पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान की जायेंगी।

इस अवसर पर जिनवाणी की अविरल धारा प्रवाहित करने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान विद्यावारिधि डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, डॉ. कपूरचन्दजी कौशल भोपाल एवं पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर आदि अनेक विशिष्ट विद्वान पधार रहे हैं।

प्रतिष्ठाविधि के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगें।

इस महामंगलमय अनुष्ठान में अध्यात्म की गंगा, भक्ति की यमुना व सिद्धान्त की सरस्वतीरूप त्रिवेणी में स्नान करके कर्मकलंक प्रक्षालन के अपूर्व प्रयास हेतु निजकल्याणार्थ सकुटुम्ब, इष्ट-मित्रों सहित पधारकर अलौकिक जीवन का निर्माण करें।

विनीत :

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक महोत्सव समिति, सागर

सम्पर्क सूत्र : आदित्य जैन 09425170520, संतोष जैन (07582) 2403512